व्यक्तित्व (Personality)

व्यक्तित्व का अर्थ एवं स्वरूप (Meaning and Nature of Personality)

प्रत्येक व्यक्ति में कुछ ऐसी विशेषताएँ होती हैं, जिनके आधार पर वह परिस्थिति के प्रति विभिन्न प्रतिक्रियाएँ करता इन्हीं प्रतिक्रियाओं को हम एक शब्द में व्यक्तित्व कहते हैं। व्यक्तित्व से ही व्यक्ति के आकर्षण का पता चलता है। कुछ लोग आशावादी होते हैं, और कुछ निराशावादी यह आपको व्यक्ति के व्यक्तित्व से पता चल जाएगा।

शाब्दिक अर्थ- व्यक्तित्व का वास्तविक अर्थ समझने से पूर्व इसका शाब्दिक अर्थ समझना अत्यन्त आवश्यक है। 'व्यक्तित्व' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'Personality' शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। Personality शब्द की उत्पत्ति अंग्रेजी भाषा के 'Persona' शब्द से हुई है जिसका अर्थ होता है वेशभूषा जिसे नाटक करते समय अभिनेता लोग पहनते हैं, जिससे कि अभिनेता राजा, नौकर अथवा अन्य किसी व्यक्ति की भूमिका (Role) अदा करता है। अतः Persona धारण कर लेने से अभिनेता का वास्तविक रूप छिप जाता है और नाटक में वह अपने को जिस रूप में प्रदर्शित करना चाहता है, उसी रूप में दिखाई पड़ता है।

सैद्धान्तिक अर्थ-

- **सामान्य दृष्टिकोण**- सामान्य दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व का अर्थ उन गुणों से लगाया जाता है, जिसके द्वारा व्यक्ति दूसरों के ऊपर अपना प्रभाव जमाता है।
- **दार्शनिक दृष्टिकोण** - इस दृष्टिकोण के अनुसार, "व्यक्तित्व पूर्णता का आदर्श और आत्म-ज्ञान है।"
- **समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण**- समाजशास्त्रियों द्वारा व्यक्तित्व को समाज में प्रभाव डालने वाला गुण कहा गया है। इसके अनुसार "व्यक्तित्व उन गुणों का संगठित रूप है, जो व्यक्ति का समाज में कार्य एवं पद निर्धारण करता है। इस तरह हम व्यक्तित्व को समाज में प्रभाव डालने वाला गुण कह सकते हैं।"
- **मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण**- फ्रायड ने व्यक्तित्व के तीन अंग बताये हैं- **इदम् (Id). अहम्**

व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक अर्थ (Psychological Meaning of Personality)

- **(Ego) और परम अहम् या नैतिक मान (Super Ego)।** इदम् अचेतन मन में स्थित मूल-प्रवृत्तियाँ तथा इच्छायें हैं, जो अनैतिक होती है और अपनी तृप्ति शीघ्र ही चाहती है। अहम् चेतना इच्छाशक्ति, तर्क तथा बुद्धि है। इसका सम्बन्ध इदम् और परम अहम् दोनों से रहता है। परम अहम् व्यक्ति का आदर्श है। यह अहम् को उसके दोषों के लिए ताड़ना देता है।
- **मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण**- इस दृष्टिकोण में व्यक्तित्व के अन्तर्गत वंशानुक्रम और पर्यावरण दोनों को ही महत्त्व दिया जाता है। यहाँ पर हमारा उद्देश्य मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से ही है। अतः व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक अर्थ समझना अत्यन्त आवश्यक है।
- व्यक्तित्व के मनोवैज्ञानिक अर्थ से तात्पर्य यह है कि मनुष्य में जितनी भी विशेषताएँ, विलक्षणताएँ तथा आन्तरिक और बाह्य पहलू होते हैं, व्यक्तित्व उन सबका ही एक संगठित रूप है। अब यह जानने की आवश्यकता पड़ती है कि व्यक्ति की विशेषताएँ, विलक्षणताएँ, आन्तरिक तथा बाह्य पहलू क्या है? व्यक्ति जब इस संसार में आता है तो उसका मस्तिष्क और शरीर पूरी तरह अविकसित होता है।
- जन्म से ही उसे कुछ प्रकृति प्रदत्त गुण तथा मूल प्रवृत्तियाँ प्राप्त होती हैं, जिनके आधार पर वह वातावरण के साथ प्रतिक्रिया करता है तथा जिसके फलस्वरूप कुछ विलक्षणताएँ जैसे-विभिन्न प्रकार की योग्यताएँ, कुशलताएँ, आदतें एवं रुचि आदि अर्जित कर लेता है। व्यक्ति के विकास के साथ व्यक्ति की शक्तियों एवं विलक्षणताओं में भी परिवर्तन एवं परिमार्जन होता है। इसलिए व्यक्तित्व को गत्यात्मक संगठन भी कहा गया है।

- आन्तरिक पहलू के अन्तर्गत उसकी रुचि, आदत, दृष्टिकोण और योग्यताएँ आती है और उनके बाह्य पहलू के अन्तर्गत उसके शरीर की बनावट, मुखमुद्रा एवं वेषभूषा आदि आती हैं। व्यक्ति के आन्तरिक एवं बाह्य पहलू के कारण ही उसे मनोशारीरिक प्राणी कहा जाता है। निष्कर्ष यह निकलता है कि व्यक्ति की जन्मजात एवं अर्जित विलक्षणताओं का गत्यात्मक संगठन ही व्यक्तित्व है।

व्यक्तित्व की परिभाषा (Definition of Personality)

वारेन के अनुसार-"व्यक्तित्व व्यक्ति का सम्पूर्ण मानसिक संगठन है, जो उसके विकास की किसी भी अवस्था में होता है।"

वुडवर्थ के अनुसार -"व्यक्तित्व के व्यवहार के समस्त गुणों को व्यक्तित्व कहते हैं।"

वैलन्टाईन के अनुसार - "व्यक्तित्व जन्मजात और आर्गेन प्रवृत्तियों का योग है।"

बोरिंग, लैंगफील्ड तथा वैल्ड के अनुसार -"व्यक्तित्व से अभिप्राय है, व्यक्ति का अपने परिवेश के साथ स्थायी तथा अपूर्व समायोजन।"

मॉटर्न के अनुसार - "व्यक्तित्व, व्यक्ति के जन्मजात तथा अर्जित स्वभाव , मूल - प्रवृत्तियों , भावनाओं तथा इच्छाओं का योग होता है।"

आलपोर्ट के अनुसार - "व्यक्तित्व, व्यक्ति में उन मनोदैहिक अवस्थाओं का गत्यात्मक संगठन है , जिनके आधार पर व्यक्ति अपने परिवेश के साथ समायोजन स्थापित करता है।"

व्यक्तित्व की विशेषताएँ (Personality characteristics)

व्यक्तित्व व्यक्ति की मानसिक अवस्थाओं का सम्मिलित योग और जन्म के समय और व्यक्ति के पिछले पूरे जीवनकाल में प्राप्ति की प्रवृत्तियों, प्रतिभा, गुणों आदि का योग है। व्यक्तित्व व्यक्ति के जीवन के सभी पहलुओं को दर्शाता है।

1) आत्मचेतना (Self-Consciousness)

व्यक्ति की प्रथम एवं प्रमुख विशेषता है- आत्मचेतना । अपनी इसी विशेषता के कारण उसे सर्वोच्च प्राणी का स्थान प्राप्त हुआ तथा उसमें व्यक्तित्व की उपस्थिति को स्वीकार किया गया। बालकों एवं पशुओं में आत्मचेतना का गुण नहीं पाया जाता है। इसलिए उनके गुणों के बारे में कुछ भी कहना सही नहीं होगा। जब व्यक्ति को यह ज्ञात हो जाता है कि समाज में उसकी क्या स्थिति है, तभी उसमें व्यक्तित्व का होना स्वीकार किया जाता है।

2) निरंतर निर्माण की क्रिया (Process of Continuous Creation)

व्यक्तित्व हमेशा निर्माण की प्रक्रिया में संलग्न रहता है अर्थात् उसके विकास में निरंतरता पायी जाती है। उसके विकास में कभी स्थिरता नहीं आती है। जैसे-जैसे व्यक्ति के विचारों, अनुभवों तथा कार्यों में परिवर्तन होता जाता है, वैसे-वैसे व्यक्तित्व के स्वरुप में भी परिवर्तन होता जाता है। निर्माण की यह क्रिया शैशवावस्था से लेकर जीवन पर्यन्त चलती रहती है। **गैरिसन** व अन्य के अनुसार, "व्यक्तित्व निरंतर निर्माण की क्रिया में रहता है।"

3) शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य (Physical and Mental Health)

मनुष्य एक मनोशारीरिक प्राणी है। उसके अच्छे व्यक्तित्व के लिए अच्छे शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य का होना जरुरी है। शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य सही न होने पर उसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं हो सकता है।

4) दृढ़ इच्छाशक्ति (Strong Willpower)

यह वह शक्ति है जो व्यक्ति को उसके मार्ग में आने वाली कठिनाइयों से संघर्ष करके उसके अपने व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने की क्षमता प्रदान करती है। व्यक्ति की यदि यह शक्ति निर्बल हो जाए तो यह उसके व्यक्तित्व को विघटित भी कर देती है।

5) निर्देशित लक्ष्य प्राप्ति (Achievement of Directed Goal)

मनुष्य हमेशा एक निश्चित उद्देश्य ले कर कार्य करता है। उसके प्रत्येक व्यवहार के पीछे कोई न कोई लक्ष्य छिपा रहता है। उसके व्यवहार व लक्ष्यों को जानकर ही हम उसके व्यक्तित्व के विषय में सहज अनुमान लगा सकते हैं। **भाटिया** के अनुसार, "व्यक्ति या व्यक्तित्व को समझने के लिए हमें इस बात पर विचार करना आवश्यक हो जाता है कि उसके लक्ष्य क्या हैं व उसमें कितना ज्ञान है। "

6) सामाजिकता (Socialism)

मनुष्य को समाज से अलग कर उसके व्यक्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मनुष्य समाज में रहते हुए जब अन्य व्यक्तियों के संपर्क में आकर क्रिया व अन्तःक्रिया करता है तो उसमें आत्मचेतना एवं व्यक्तित्व का विकास होता है। अतः व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए सामाजिकता का होना जरुरी है।

7) सामंजस्य (Coordination)

व्यक्ति को केवल बाह्य वातावरण से ही नहीं, बल्कि अपने व्यक्तिगत (आन्तरिक) जीवन से भी सामंजस्य स्थापित करना पड़ता है। जब व्यक्ति सामंजस्य स्थापित करता है तो उसके व्यवहार में परिवर्तन होता जाता है। यही कारण है कि चोर, डॉक्टर, चपरासी, इन सबके व्यवहार में क्रमशः अंतर पाया जाता है। वस्तुतः मानव को अपने व्यक्तित्व को अपनी दशाओं एवं स्थितियों के अनुकूल बनाना पड़ता है।

8) एकीकरण (Integration)

एकीकरण का तात्पर्य **व्यक्तित्व (Personality)** के एकीकरण से है। जिस प्रकार व्यक्ति के शरीर का कोई अंग अकेले कार्य नहीं करता है। उसी प्रकार व्यक्तित्व का कोई तत्व अकेले कार्य नहीं कर सकता है। ये तत्व हैं नैतिक, सामाजिक, मानसिक, शारीरिक, संवेगात्मक आदि व्यक्तित्व के इन सभी तत्वों में एकीकरण का गुण पाया जाता है। **भाटिया के अनुसार**, "व्यक्तित्व (Personality) मानव की सभी शक्तियों व गुणों का संगठन व एकीकरण है।"

व्यक्तित्व का वर्गीकरण (Classification of Personality)

व्यक्ति के व्यक्तित्व का वर्गीकरण हम कई तरह से कर सकते हैं। क्योंकि की व्यक्तित्व एक बहुत बड़ा, उलझा हुआ और अपने अंदर अनेक प्रकार के गुणों और अवगुणों को समाहित किये हुये है। इसलिए व्यक्तित्व का वर्गीकरण किसी एक वस्तु, अनुशासन या गुण के आधार पर नही किया जा सकता है। भिन्न-भिन्न गुणों और अनुशासनों के आधार पर हम व्यक्तित्व का कई तरह से वर्गीकरण किया गया है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने तरीके से व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया है, जिनमें से कुछ को हम यहां बताने जा रहे हैं। व्यक्तिव के वर्गीकरण के प्रकार निम्नलिखित हैं-

1. **सामाजिक अन्तःक्रिया के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण**
    - अन्तर्मुखी व्यक्तित्व
    - बहिर्मुखी व्यक्तित्व
    - उभयमुखी व्यक्तित्व
2. **सृजनात्मक शक्ति के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण**
    - सृजनात्मक व्यक्तित्व

- असृजनात्मक व्यक्तित्व

3. स्वभाव के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण

- उग्र स्वभावी व्यक्तित्व
- चिन्ताग्रस्त व्यक्तित्व
- निरूत्साही व्यक्तित्व
- उत्साही व्यक्तित्व

4. मूल्यों के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण

- सैद्धान्तिक मूल्य
- आर्थिक मूल्य
- सामाजिक मूल्य
- राजनैतिक मूल्य
- धार्मिक मूल्य
- सौन्दर्यात्मक मूल्य

5. शारीरिक रचना के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण

- लम्बकाय शारीरिक संरचना
- सुडौलकाय शारीरिक संरचना
- गोलकाय शारीरिक संरचना

6. समायोजन के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण

- सुसमायोजित समायोजन
- कुसमायोजित समायोजन

सामाजिक अन्तःक्रिया के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण

मनोवैज्ञानिक जुंग ने व्यक्तित्व का वर्गीकरण करने के लिए व्यक्तियों को उनकी सामाजिक अन्तःक्रिया के स्वरूप को आधार मानकर निम्नलिखित तीन वर्गों में विभाजित किया है-

1. **अन्तर्मुखी व्यक्तित्व** अंतर्मुखी व्यक्तित्व के लोग सोचने, मनन और चिंतन जैसे कार्य में गुणी होते हैं। मनोवैज्ञानिक जुग ने व्यक्तित्व के वर्गीकरण में इस वर्ग में उन व्यक्तियों को शामिल किया है जो आत्म चिंतन आत्म केंद्रित और शांति प्रिय होते हैं। अंतर्मुखी व्यक्तित्व के व्यक्ति संवेदनशील, कर्तव्यनिष्ठ और मितभाषी होते है। व्यक्तित्व के वर्गीकरण में इस वर्ग के व्यक्ति प्रायः संकोची होते हैं, समाज में अपने विचार रखने में संकोच करते हैं, और सामाजिक व्यवहार में उतना अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं। इस व्यक्तित्व के लक्षण, स्वभाव, आदतें, अभिवृत्तियाँ आदि बाह्य रूप में प्रकट नहीं होते हैं। इसीलिए, इसको अन्तर्मुखी कहा जाता है। इसका विकास बाह्य रूप में न होकर आन्तरिक रूप में होता है। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएं है-

- ऐसे व्यक्ति का बाह्य जगत की वस्तुओं से कम अनुराग होता है।
- वे एकांकी होते है।
- वे कर्तव्य परायण होते है तथा समय का सदैव ध्यान रखते है।
- यह व्यवहार कुशल नहीं होता तथा हँसी, मजाक एवं व्यर्थ के छलों आदि में नहीं फँसता।
- युंग ने अन्तर्मुखी व्यक्तियों को विचार प्रधान, भावप्रधान, तर्क प्रधान व दिव्यदृष्टि प्रधान चार रूपों में विभक्त किया है।

- यह चिन्ताग्रस्त होते है तथा अपनी वस्तुओं व कष्टों के प्रति सजग होते है।
- ये भाव प्रधान होते है, आत्मचिन्तन करते है तथा आत्मोदार हेतु लीन रहते है।
- ये स्वयं के लिए चिन्तशील होते है तथा शान्त मुद्रा में रहते है।
- अच्छे लेखक होते हैं परन्तु अच्छे वक्ता नहीं क्योंकि चिन्तन का धरातल प्रबल होता है।
- ये प्रायः प्रतिक्रियावादी होते हैं तथा यथार्थ को अपने स्वभाव के अनुरूप ढालने का प्रयास करते है।

2. बहिर्मुखी व्यक्तित्व

व्यक्तित्व के वर्गीकरण में मनोवैज्ञानिक जुंग ने बहिर्मुखी व्यक्तित्व में उन व्यक्तियों को रखा है जो समाजकेन्द्रित, व्यावहारिक, साहसिक, चिन्तामुक्त और आशावादी होते हैं। ऐसे व्यक्ति सामाजिक कार्यों में रूचि लेते हैं और लोकप्रियता प्राप्त करते हैं। जैसे कि एक कुशल वक्ता। **बहिर्मुखी व्यक्तित्व** ऐसे व्यक्तित्व वाले व्यक्ति की रूचि बाह्य जगत में होती है। वे अपने विचारों और भावनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते है। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

- इनमें कार्यकुशलता की मात्रा अन्तर्मुखी से अधिक होती है।
- ये सबको प्रसन्न करने वाले होते है तथा प्रशंसकों से घिरे रहने की कामना करते हैं।
- ये विचार प्रधान तथा व्यवहार-कुशल होते हैं तथा निर्णय भी भावों के अनुरूप ही लेते हैं।
- वातावरण के साथ आसानी से अनुकूलन कर लेते है।
- आत्मचिन्तनशील नहीं होते परन्तु सभी के विचारों के आधार पर अपना विचार प्रकट करते हैं।
- बाह्य क्रियाओं की ओर संवेदनशील होते हैं।
- ये धारा प्रवाह बोलने वाले होते है।
- स्वयं की पीड़ा, परिस्थिति की चिन्ता नहीं करते व चिन्तामुक्त होते है।

3. उभयमुखी व्यक्तित्व

जिन व्यक्तियों में अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी दोनों व्यक्तित्वों के लक्षण लगभग समान रूप से उपस्थित होते हैं, उन्हें मनोवैज्ञानिक जुंग ने व्यक्तित्व के वर्गीकरण में उभयमुखी वर्ग में रखा है।

सृजनात्मक शक्ति के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के वर्गीकरण में व्यक्तियों को उनकी सृजनात्मक शक्ति के आधार पर दो वर्गों में विभाजित किया है।

• सृजनात्मक व्यक्तित्व: -

ऐसे व्यक्ति जिनमें लीक से हटकर चलने, कुछ नया सोचने एवं करने की इच्छाशक्ति होती है, उन्हें सृजनात्मक व्यक्तित्व का व्यक्ति कहा जाता है। सृजनशील व्यक्ति संवेदनशील होते हैं, प्रगतिशील और स्वतन्त्र निर्णय लेने में सक्षम होते हैं।

• असृजनात्मक व्यक्तित्व: -

व्यक्तित्व के वर्गीकरण में असृजनात्मक व्यक्तित्व के व्यक्ति न कभी नया सोचते हैं, और न ही कभी कुछ नया करते हैं। असृजनात्मक व्यक्तियों में स्वतन्त्र चिन्तन की क्षमता नहीं होती, ये दूसरों पर निर्भर करते हैं, और साथ ही रूढ़िवादी भी होते हैं।

स्वभाव के आधार पर वर्गीकरण

मनोवैज्ञानिक गलैन ने व्यक्तियों को उनके स्वभाव के आधार पर निम्नलिखित चार वर्गों में विभाजित किया है।

- **उग्र स्वभावी व्यक्तित्व :-**

इस वर्ग में गलैन ने उग्र स्वभाव वाले व्यक्तियों को रखा है। इस वर्ग के व्यक्तियों को क्रोध बहत शीघ्र आता है ।

- **चिन्ताग्रस्त व्यक्ति :-**

इस वर्ग में गलैन ने चिन्ता से ग्रस्त रहने वाले व्यक्तियों को रखा है। इस वर्ग के व्यक्ति प्रायः उदास रहते हैं और बड़े दब्बू एवं निराशावादी होते हैं।

- **निरूत्साही व्यक्तित्व :-**

इस वर्ग में गलैन ने उत्साहहीन व्यक्तियों को रखा है। इस वर्ग के व्यक्ति प्रायः शान्तप्रिय और आलसी होते हैं।

- **उत्साही व्यक्ति :-**

इस वर्ग में गलैन ने उत्साह से पूर्ण व्यक्तियों को रखा है। इस वर्ग के व्यक्ति आशावादी और क्रियाशील होते हैं।

मूल्यों के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण

मनोवैज्ञानिक स्प्रेजर ने मूल्यों के आधार पर व्यक्तित्व को भी निम्नलिखित छः वर्गों में विभाजित किया है।

सैद्धान्तिक मूल्य :-

व्यक्तित्व की वर्गीकरण में स्पेंजर ने इस वर्ग उन व्यक्तियों को रखा है, जो सदैव ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक रहते हैं, सिद्धान्तों को महत्त्व देते हैं और आदर्शो का पालन करते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रायः अव्यावहारिक होते हैं।

आर्थिक मूल्य :-

व्यक्तित्व की वर्गीकरण में स्पेंजर ने इस वर्ग उन व्यक्तियों को रखा है, जो भौतिक सुखों के इच्छुक होते हैं और धन को ज्यादा महत्व देते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रायः व्यावहारिक होते हैं।

सामाजिक मूल्य :-

व्यक्तित्व की वर्गीकरण में स्पेंजर ने इस वर्ग उन व्यक्तियों को रखा है, जो समाज और सामाजिक सम्बन्धों को अधिक महत्त्व देते हैं। इस वर्ग के व्यक्ति दयालु, त्यागी और परोपकारी होते हैं। ऐसे व्यक्ति बहुत अधिक व्यवहारकुशल होते हैं।

राजनैतिक मूल्य :-

इस वर्ग में स्पेंजर ने उन व्यक्तियों को रखा है, जो राजकार्य और राजसत्ता से जुड़े रहना चाहते हैं। ऐसे व्यक्ति राजनैतिक दाँव-पेंच में बड़े माहिर होते हैं।

धार्मिक मूल्य :-

व्यक्तित्व की वर्गीकरण में स्पेंजर ने इस वर्ग उन व्यक्तियों को रखा है, जो ईश्वर में विश्वास करते हैं और आध्यात्मिक मूल्यों का पालन करते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रायः आत्मसन्तोषी एवं परोपकारी होते हैं।

सौन्दर्यात्मक मूल्य :-

व्यक्तित्व की वर्गीकरण में स्पेंजर ने इस वर्ग उन व्यक्तियों को रखा है, जो सौन्दर्य प्रिय होते हैं, ऐसे व्यक्ति प्रायः कला, संगीत, एवं नृत्य आदि में रुचि रखते हैं।

शारीरिक रचना के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण

शैल्डन और क्रेचमर जैसे कई मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व का वर्गीकरण मनुष्य की शारीरिक रचना के आधार पर भी किया है। मनोवैज्ञानिक क्रेचमर के अनुसार व्यक्तित्व का वर्गीकरण निम्नलिखित 3 भागों में किया गया है।

- **लम्बकाय शारीरिक संरचना :-**

इस वर्ग में क्रेचमर ने लम्बे और दुबले-पतले व्यक्तियों को रखा है। ये व्यक्ति प्रायः अलग रहना पसन्द करते हैं और दूसरों की आलोचना में आनन्द लेते हैं, परन्तु अपनी आलोचना सहन नहीं करते हैं।

- **सुडौलकाय शारीरिक संरचना :-**

इस वर्ग में क्रेचमर ने सामान्य कद के स्वस्थ एवं पुष्टकाय व्यक्तियों को रखा है। ऐसे व्यक्तियों का व्यक्तित्व सामान्य होता है और इनमें सामंजस्य की क्षमता भी अधिक होती है।

- **गोलकाय शारीरिक संरचना :-**

गोलकाय शरीरिक संरचना वर्ग में क्रेमचर ने छोटे कद के स्वस्थ व्यक्तियों को रखा है। ये व्यक्ति प्रायः आरामतलब होते हैं और विनोदी स्वभाव के होते हैं।

समायोजन के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण

अधिकतर मनोवैज्ञानिक ने व्यक्तित्व को समायोजन के आधार पर वर्गीकृत किया है। इन मनोवैज्ञानिकों का मत है कि प्रत्येक व्यक्ति जन्म के साथ ही कुछ गुणों एवं शक्तियों के साथ इस दुनिया में आता है, जो उसे उसके माता-पिता से या आनुवंशिक रूप में प्राप्त होती हैं। लेकिन व्यक्ति को इस दुनिया के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए कार्य करना पड़ता है, अपने गुणों को बढ़ाना होता है, जिससे वह भाह्य ताकतों से लड़ सके। यह समायोजन का कार्य प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने तरीके से करता है, जिसके आधार पर हम व्यक्तित्व को निम्नलिखित दो भागों में वर्गीकृत कर सकते हैं।

- **सुसमायोजित समायोजन**

जो व्यक्ति अपनी आन्तरिक एवं बाह्य शक्तियों सन्तुलन बनाने में समर्थ होते हैं, उन्हें सुसमायोजित व्यक्तित्व वाला व्यक्ति कहा जाता हैं। सुसमायोजित व्यक्तित्व वाले लोगों का व्यवहार बहुत सन्तुलित होता है, और समाज सम्मत होता है।

- **कुसमायोजित समायोजन :-**

जो व्यक्ति अपनी आन्तरिक एवं बाह्य शक्तियों एवं माँगों में सन्तुलन नहीं बना पाते हैं, उन्हें कुसमायोजित व्यक्तित्व वाला व्यक्ति कहा जाता है। ऐसे व्यक्तियों का व्यवहार बड़ा असन्तुलित होता है, और इनका व्यवहार प्रायः असामाजिक भी होता है।

व्यक्तित्व का शीलगुण / विशेषक उपागम (Trait Approach to Personality)

विशेषक उपागम (Trait Approach) इस विचार पर आधारित है कि व्यक्तित्व विभिन्न **शीलगुणों (Traits)** का संगठन है। शीलगुण व्यवहार की वे विशेषताएं हैं जो अपेक्षाकृत **स्थिर (Stable)** और **संगत (Consistent)** होती हैं। यानी, यदि कोई व्यक्ति आज ईमानदार है, तो वह कल और विभिन्न परिस्थितियों में भी ईमानदारी ही दिखाएगा।

मनोविज्ञान में, शीलगुण (Trait) से तात्पर्य व्यवहार के उस प्रतिमान से है जो समय (Time) और परिस्थितियों (Situations) के बदलने पर भी **अपरिवर्तित** रहता है।

ऑलपोर्ट के अनुसार: "शीलगुण एक ऐसी मानसिक संरचना है जो कई तरह के उद्दीपकों को एक समान कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।"

शीलगुण **"जन्मजात" (Innate)** और **"अर्जित" (Learned)** दोनों हो सकते हैं। आइजेंक इसे जन्मजात मानते थे, जबकि कैटल ने पर्यावरण के प्रभाव को भी स्वीकार किया था।

गुण उपागम की मूल धारणाएँ (Basic Assumptions)

1. व्यक्तित्व अनेक गुणों का संगठन है
2. प्रत्येक व्यक्ति में गुणों का संयोजन अलग होता है
3. गुण समय के साथ अपेक्षाकृत स्थिर रहते हैं
4. गुणों का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन और मापन किया जा सकता है

विशेषक उपागम की प्रमुख विशेषताएँ (Characteristics of Trait Approach)

1. व्यवहार की स्थिरता (Stability of Behaviour)- इस उपागम की सबसे बड़ी विशेषता यह मानना है कि व्यक्तित्व के गुण समय के साथ **स्थिर (Stable)** रहते हैं। यदि कोई व्यक्ति आज 'बहिर्मुखी' (Extrovert) है, तो वह 10 साल बाद भी वैसा ही रहने की संभावना रखता है।

2. निरंतरता (Consistency)- विशेषक उपागम के अनुसार, व्यक्ति का व्यवहार विभिन्न परिस्थितियों में **संगत (Consistent)** रहता है। उदाहरण के लिए, एक ईमानदार व्यक्ति केवल घर पर ही नहीं, बल्कि ऑफिस और बाजार में भी ईमानदारी ही दिखाएगा।

3. व्यक्तिगत भिन्नता (Individual Differences)- यह सिद्धांत मानता है कि हर व्यक्ति गुणों के एक **अद्वितीय संयोजन (Unique Combination)** से बना है। हालांकि गुण सभी में समान हो सकते हैं (जैसे साहस), लेकिन उनकी मात्रा (Quantity) हर व्यक्ति में अलग-अलग होती है, जो उसे दूसरों से भिन्न बनाती है।

4. मापन-योग्यता (Measurability)- यह एक **वैज्ञानिक और सांख्यिकीय** उपागम है। मनोवैज्ञानिकों (जैसे कैटल और आइजेंक) ने 'कारक विश्लेषण' (Factor Analysis) जैसी गणितीय विधियों का उपयोग करके व्यक्तित्व के गुणों को मापने के लिए प्रश्नावली (Questionnaires) और टेस्ट विकसित किए हैं।

5. पदानुक्रमित संरचना (Hierarchical Structure)- गुणों को अक्सर एक क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। ऑलपोर्ट ने इसे तीन स्तरों (कार्डिनल, केंद्रीय और गौण) में बाँटा, जबकि आइजेंक ने इसे चार स्तरों (विशिष्ट अनुक्रिया से लेकर प्रकार स्तर तक) में समझाया।

6. द्विध्रुवीय प्रकृति (Bipolar Nature)- आधुनिक विशेषक सिद्धांतों (जैसे Big Five) में गुणों को अक्सर दो ध्रुवों के बीच एक **सातत्यक (Continuum)** के रूप में देखा जाता है। उदाहरण के लिए, 'अंतर्मुखता बनाम बहिर्मुखता'—व्यक्ति इन दोनों के बीच किसी एक बिंदु पर स्थित होता है।

7. भविष्यवाणी करने की क्षमता (Predictability)- चूंकि यह उपागम गुणों को स्थिर मानता है, इसलिए इसके आधार पर यह **भविष्यवाणी (Prediction)** की जा सकती है कि एक व्यक्ति किसी विशेष परिस्थिति में कैसा व्यवहार करेगा।

शीलगुण सिद्धांत : प्रमुख मनोवैज्ञानिक और उनके सिद्धांत

1. गॉर्डन ऑलपोर्ट का शीलगुण सिद्धांत (Gordon Allport's Theory)
2. रेमंड कैटल का 16-शीलगुण सिद्धांत (Raymond Cattell's 16PF)
3. हैंस आइजेंक का सिद्धांत (Hans Eysenck's Dimensions)
4. पंच-कारक मॉडल (Big Five Factor Model - OCEAN)

1. गॉर्डन ऑलपोर्ट का शीलगुण सिद्धांत (Gordon Allport's Theory)

ऑलपोर्ट को विशेषक मनोविज्ञान का जनक माना जाता है। उन्होंने व्यक्तित्व को "मनोशारीरिक तंत्र का गत्यात्मक संगठन" माना है। उन्होंने शीलगुणों को तीन मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया:

- **कार्डिनल विशेषक (Cardinal Traits):** ये वे गुण हैं जो व्यक्ति के पूरे जीवन पर हावी रहते हैं। व्यक्ति अपनी पूरी पहचान इसी गुण के कारण बनाता है (जैसे: गांधीजी की 'अहिंसा' या हिटलर की 'तानाशाही')।
- **केंद्रीय विशेषक (Central Traits):** ये वे बुनियादी गुण हैं जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व की नींव होते हैं (जैसे: ईमानदारी, बुद्धिमत्ता, शर्मीलापन)। आमतौर पर एक व्यक्ति में 5 से 10 केंद्रीय विशेषक होते हैं।
- **गौण विशेषक (Secondary Traits):** ये वे गुण हैं जो केवल विशेष परिस्थितियों में ही प्रकट होते हैं (जैसे: विशेष प्रकार के कपड़े पहनना या किसी खास खाने की पसंद)।

2. रेमंड कैटल का 16-शीलगुण सिद्धांत (Raymond Cattell's 16PF)

कैटल ने **सांख्यिकीय विधि (Factor Analysis)** का प्रयोग करके व्यक्तित्व के तत्वों को खोजा।

- **सतही बनाम स्रोत विशेषक (Surface vs Source Traits):**
  - **सतही विशेषक:** वे गुण जो बाहर से दिखाई देते हैं (जैसे: परोपकार)।
  - **स्रोत विशेषक:** वे गहरे गुण जो व्यक्तित्व की वास्तविक संरचना करते हैं। कैटल ने ऐसे **16 मूल स्रोत विशेषकों** की पहचान की।
- **16PF Questionnaire:** कैटल के अनुसार, हर व्यक्ति में ये 16 गुण कम या ज्यादा मात्रा में पाए जाते हैं। इन्हीं के आधार पर '16PF Questionnaire' तैयार किया गया।

कारक (Factor)	निम्न अंक (Low Score)	उच्च अंक (High Score)
A	आरक्षित/अलग-थलग (Reserved)	मिलनसार (Outgoing)
B	कम बुद्धि (Concrete thinking)	अधिक बुद्धि (Abstract thinking)
C	भावनाओं से प्रभावित (Affected by feelings)	संवेगात्मक स्थिरता (Emotionally stable)
E	विनम्र/दब्बू (Humble)	प्रभावशाली/आक्रामक (Dominant)
F	गंभीर (Sober)	जिंदादिल (Enthusiastic)
G	अवसरवादी (Expedient)	नियम-निष्ठ/नैतिक (Conscientious)
H	शर्मीला (Shy)	साहसी (Bold)
I	कठोर स्वभाव (Tough-minded)	कोमल स्वभाव (Sensitive)
L	विश्वासी (Trusting)	शंकालु (Suspicious)
M	व्यावहारिक (Practical)	कल्पनाशील (Imaginative)
N	स्पष्टवादी (Forthright)	चतुर/व्यवहारकुशल (Shrewd)
O	आत्मविश्वासी (Self-assured)	आशंकित/चिंतित (Apprehensive)
Q1	रूढ़िवादी (Conservative)	प्रयोगधर्मी/उदार (Experimenting)
Q2	समूह-निर्भर (Group-dependent)	आत्मनिर्भर (Self-sufficient)
Q3	अनियंत्रित (Undisciplined)	नियंत्रित/अनुशासित (Controlled)
Q4	शांत/शिथिल (Relaxed)	तनावपूर्ण (Tense)

3. हंस आइजेंक का सिद्धांत (Hans Eysenck's Dimensions)

आइजेंक ने व्यक्तित्व को जैविक (Biological) आधार पर समझाया। उन्होंने **PEN मॉडल** दिया, जिसमें तीन मुख्य आयाम (Dimensions) हैं:

1. **साइकोटिसिज्म बनाम सुपर-ईगो (Psychoticism vs Super-ego):** आक्रामकता और सामाजिक नियमों को मानने की प्रवृत्ति।
2. **अंतर्मुखता बनाम बहिर्मुखता (Introversion vs Extraversion):** सामाजिक सक्रियता का स्तर।
3. **न्यूरोटिसिज्म बनाम स्थिरता (Neuroticism vs Stability):** संवेगात्मक स्थिरता।

आयाम (Dimension)	विवरण
P - Psychoticism	आक्रामकता, असामाजिक व्यवहार बनाम सामाजिकता।
E - Extraversion	बाहरी दुनिया से जुड़ाव बनाम अंतर्मुखता।
N - Neuroticism	भावनात्मक अस्थिरता बनाम संवेगात्मक स्थिरता।

4. पंच-कारक मॉडल (Big Five Factor Model - OCEAN)

आधुनिक मनोविज्ञान में यह सबसे मान्य मॉडल है। इसमें पाँच मुख्य आयाम शामिल हैं:



- **O (Openness):** अनुभवों के प्रति खुलापन।
- **C (Conscientiousness):** कर्तव्यनिष्ठा।
- **E (Extraversion):** बहिर्मुखता।
- **A (Agreeableness):** सहमति-जन्यता।
- **N (Neuroticism):** स्नायुविकृति/अस्थिरता।

शीलगुण सिद्धांत की सीमाएँ / दोष (Demerits)

1. परिस्थितियों की उपेक्षा

यह सिद्धांत यह मान लेता है कि व्यवहार मुख्यतः गुणों द्वारा नियंत्रित होता है, जबकि **परिस्थितिजन्य कारकों** की भूमिका को कम महत्व दिया गया है।

2. व्यक्तित्व विकास की व्याख्या का अभाव

यह सिद्धांत यह नहीं बताता कि गुणों का **विकास कैसे होता है** और वे समय के साथ कैसे बदलते हैं।

3. केवल वर्णनात्मक, न कि व्याख्यात्मक

यह सिद्धांत यह बताता है कि व्यक्ति कैसा है, पर यह स्पष्ट नहीं करता कि वह **ऐसा क्यों है**।

4. आंतरिक प्रेरणाओं की अनदेखी

फ्रायड जैसे मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांतों की तुलना में इसमें **अचेतन, प्रेरणा और भावनाओं** पर कम ध्यान दिया गया है।

5. गुणों की संख्या पर असहमति

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अलग-अलग संख्या में गुण बताए हैं, जिससे सिद्धांत में **एकरूपता का अभाव** दिखाई देता है।

6. सांस्कृतिक प्रभावों की उपेक्षा

गुणों की व्याख्या मुख्यतः पश्चिमी संदर्भ में की गई है, जो सभी संस्कृतियों पर समान रूप से लागू नहीं होती।